ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-2* May- 2017
Anthology : The Research

टिहरी जनपद के निम्न व उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की प्रभावशीलता का व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्ध का अध्ययन

सारांश

यह एक सामान्य अवधारणा है कि यदि विद्यालय के पास सभी आवश्यक मूलभूत तथा आधुनिक सुविधायें यथा– शिक्षण सामग्री, भवन, पुस्तकालय, सुसज्जित प्रयोगशालायें तथा कम्प्यूटर हैं तो वह व्यक्ति तथा समुदाय की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान कर सकता है परन्तु यदि अध्यापक अप्रभावी है, वह अपनी भूमिका तथा उत्तरदायत्वों का निर्वाहन सही प्रकार से नहीं कर रहे हैं तो वह सारी मेहनत बेकार हो सकती है।

मुख्य शब्द : प्राथमिक शिक्षण,व्यवसाय सम्बद्धता, शिक्षण सामग्री

सुनीता गोदियाल
विभागाध्यक्ष,
शिक्षा संकाय,
एस आर टी कैम्पस,
टिहरी, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड

सुलोचना सजवाण
एसोसिएट प्रोफेसर,
श्री देव भूमि बी0एड0एम0एड0 कालेज,
प्रेमनगर पौधा, देहरादून,
उत्तराखण्ड

प्रस्तावना

प्राचीन काल में शिक्षक की प्रभावशीलता का परिचय उनके छात्रों की उपलब्धियों से ज्ञात किया जाता था। छात्रों की सफलता तथा असफलता उनके ज्ञान पारंगतता और कौशल इत्यादि द्वारा छात्र तथा अध्यापक दोनों की सफलता एवं असफलता का मूल्यांकन किया जाता था। इससे भी अध्यापक की प्रभावशीलता का निर्णय होता था कि छात्र के साथ क्या हुआ और अध्यापक ने क्या किया। वर्तमान समय में भी विभिन्न विधाओं तथा क्षेत्रों में पारंगत लोगों की सफलता से उनके अध्यापकों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया जाता है।

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि किसी भी विद्यालय अथवा संस्थान की प्रगति उनके अध्यापकों की गुणवत्ता, प्रभावशीलता तथा संस्थान के प्रति दृष्टिकोण या व्यवहार पर निर्भर करती है। संस्थान/ विद्यालय तभी समृद्व हो सकता है जबकि उसमे कार्यरत् अध्यापकों की अपने व्यवसाय से सम्बद्वता हो तथा वे अपने पद से सन्तुष्ट हों।

व्यवसाय सम्बद्वता मनोवैज्ञानिक रूप से किसी व्यक्ति के उस भाव या प्रतिष्ठा को प्रदर्शित करता है जो कि वह अपने व्यवसाय तथा उस व्यवसाय की सम्पूर्णता के महत्व के सन्दर्भ मे महसूस करता है। व्यवसाय का निर्धारण मुख्यतः व्यक्ति के रोजगार से सम्बन्धित विशिष्ट कार्य से होता है दूसरे शब्दों मे कहा जा सकता है कि व्यक्ति की सामाजिक, सांस्कृतिक तथा, आर्थिक परिस्थितियां उसके व्यवसाय सम्बद्वता को प्रभावित करती हैं।

आज समाज में विभिन्न प्रकार के विद्यालय स्थित हैं जैसे राजकीय विद्यालय, निजी विद्यालय, केन्द्रीय विद्यालय, नवोदय विद्यालय इत्यादि। इन सभी प्रकार के विद्यालयों में शिक्षण अधिगम परिस्थितियाँ भी भिन्न–भिन्न होती हैं। शिक्षकों को अनेक भूमिकाओं का निर्वहन करना पड़ता है। प्रश्न यह है कि वर्तमान अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम ऐसे शिक्षकों को तैयार करता है जो अलग–अलग परिस्थितियों वाले विद्यालयों में प्रभावी रूप से कार्य कर सकते हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्यापन हेतु प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण महाविद्यालयों में शिक्षण प्रशिक्षण से संबधित विभिन्न अधिगम निवेश प्रदान किए जाते हैं।

समस्या का चयन/उद्भव

किसी भी अध्यापक की प्रभावशीलता का उनके व्यवसाय सम्बद्वता से सम्बन्ध पर सम्पूर्ण रूप से विचार किया जाए। इसी सन्दर्भ मे शोधकर्ती ने यह महसूस किया है कि विभिन्न शिक्षण स्तरों पर कार्यरत् अध्यापकों की प्रभावशीलता का उनके व्यवसाय सम्बद्वता पर क्या प्रभाव पडता है, इसका अध्ययन किया जाना चाहिये।

अतः शोधकर्ती ने इस समस्या को ध्यान मे रखकर विभिन्न शिक्षण स्तरों में अध्यापन करने वाले अध्यापक / अध्यापिकाओं का चयन शोध अध्ययन हेतु किया है।

समस्या का कथन

टिहरी जनपद के निम्न व उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की प्रभावशीलता का व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्ध का अध्ययन

अध्ययन के उद्देश्य

विभिन्न शिक्षण स्तरों (निम्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, निम्न माध्यमिक, उच्च माध्यमिक) मे अध्यापनरत् अध्यापकों एवं अध्यापिकाओं की प्रभावशीलता एवं उनके पद सन्तुष्टि (Job Satisfaction) के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

परिकल्पनाऐं

1. निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
2. उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
3. निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।
4. उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं है।

समस्या का सीमांकन

शोध अध्ययन उत्तराखण्ड राज्य के गढवाल परिक्षेत्र के टिहरी जनपद के ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों में स्थापित विभिन्न शिक्षण स्तरों (निम्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, निम्न माध्यमिक, उच्च माध्यमिक) के विद्यालयों मे अध्यापन का कार्य करने वाले अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं तक सीमित किया गया है।

अध्ययन विधि

शोध की प्रकृति, समय–सीमा, उपलब्ध साधनों एवं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए शोधकर्त्ता ने सामान्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन हेतु जनसंख्या के रूप में उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल हिमालय के **टिहरी जनपद** के विभिन्न शिक्षण स्तरों (निम्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, निम्न माध्यमिक, उच्च माध्यमिक) के विद्यालयों में अध्यापनरत् अध्यापकों व अध्यापिकाओं को शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु विभिन्न शिक्षण स्तरों के विद्यालयों में कार्यरत्त अध्यापकों का चयन **यादृच्छिक न्यादर्श विधि** के द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

प्रांसगिक आंकड़ों के संकलन करने के क्रम में एवं प्रस्तावित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसन्धानकर्त्ता द्वारा निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया हैः–

1. कुलसुम टीचर इफेक्टिवनेस स्केल
2. जॉब इन्वाल्वमेन्ट एण्ड सेटिस्फेक्शन क्वेश्चनायर – आर०एन०कानूनगो

आँकडों का विश्लेषण

परिकल्पना – 1

निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य प्राप्त टी–मान

क्र.स.	समूह का नाम	सख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	उच्च प्रभावशील अध्यापक/अध्यापिकाएं	99	85.91	7.09	3.32	0.01 (df=216) **सार्थक**
2	निम्न प्रभावशील अध्यापक/अध्यापिकाएं	119	73.48	6.22		

उपरोक्त तालिका निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण को प्रदर्शित करती है। तालिका से प्राप्त 'टी' मान 3.32 है जोकि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतन्त्रता अशं 216) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च एवं निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकार की जाती है। इसका अर्थ है कि निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता एवं निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता में सार्थक अन्तर है।

चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान अपेक्षा अधिक है। इसलिए निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

परिकल्पना – 2

उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य प्राप्त टी–मान

क्र.स.	समूह का नाम	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	उच्च प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	71	86.24	7.20	3.26	0.01 (df=159) सार्थक
2	निम्न प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	90	71.80	7.80		

उपरोक्त तालिका उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण को प्रदर्शित करती है। तालिका से प्राप्त 'टी' मान 3.26 है जोकि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतन्त्रता अशं 159) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च एवं निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकार की जाती है। इसका अर्थ है कि उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता एवं निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता में सार्थक अन्तर है।

चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान अपेक्षा अधिक है। इसलिए उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

परिकल्पना – 3

निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य प्राप्त टी–मान

क्र.स.	समूह का नाम	सख्यां	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी– मान	सार्थकता का स्तर
1	उच्च प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	75	85.72	8.26	3.58	0.01 (df=162) सार्थक
2	निम्न प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	89	72.10	8.73		

उपरोक्त तालिका निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण को प्रदर्शित करती है। तालिका से प्राप्त 'टी' मान 3.58 है जोकि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतन्त्रता अशं 162) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च एवं निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकार की जाती है। इसका अर्थ है कि निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता एवं निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता में सार्थक अन्तर है।

चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान अपेक्षा अधिक है। इसलिए निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

परिकल्पना – 4

उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनके व्यवसाय सम्बद्धता के मध्य प्राप्त टी–मान

क्र.स.	समूह का नाम	सख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मान	सार्थकता का स्तर
1	उच्च प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	61	86.90	6.77	6.91	0.01 (df=130) lkFkZd
2	निम्न प्रभावशील अध्यापक / अध्यापिकाएं	71	71.03	7.33		

उपरोक्त तालिका उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण को प्रदर्शित करती है। तालिका से प्राप्त 'टी' मान 6.91 है जोकि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतन्त्रता अशं 130) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः

अन्तर सार्थक पाया गया है। इसलिए शून्य परिकल्पना ''उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च एवं निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकार की जाती है। इसका अर्थ है कि उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता एवं निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता में सार्थक अन्तर है।

चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान अपेक्षा अधिक है। इसलिए उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है।

निष्कर्ष

निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बन्द्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त टी मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक है चूंकि टी मान सार्थकता 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान के अपेक्षा अधिक है। इसलिए निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है। अतः निम्न प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक पाई गयी है। इससे यह सिद्ध होता है कि अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता उनकी व्यवसाय सम्बद्धता पर सार्थक प्रभाव डालती है।

उच्च प्राथमिक स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त टी मान 3.26 है जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतंत्रता अंश 159) पर टी सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है।

चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है तथा उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान के अपेक्षा अधिक है। इसलिए उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च प्राथमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक है। एवं उच्च व निम्न प्रभावशीलता अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त 'टी' मान 3.58 है जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतंत्रता अंश 162) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है। चूंकि 'टी' मान की सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है तथा निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान भी निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है इसलिए निम्न माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक पायी गयी है। अतः कहा जा सकता है कि अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता किसी न किसी रूप में उनकी व्यवसाय सम्बद्धता को प्रभावित करती है।

उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् अध्यापकों की उच्च व निम्न प्रभावशीलता तथा उनकी व्यवसाय सम्बद्धता से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त 'टी' मान 6.91 है जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर (स्वतंत्रता अंश 130) पर 'टी' सारणी के मान से अधिक है। अतः अन्तर सार्थक पाया गया है। चूंकि 'टी' मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया है तथा उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों का मध्यमान निम्न प्रभावशील अध्यापकों के मध्यमान की अपेक्षा अधिक है इसलिए उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता से अधिक पायी गयी है। अतः कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक शिक्षण स्तर में कार्यरत् उच्च प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता निम्न प्रभावशील अध्यापकों की व्यवसाय सम्बद्धता को सार्थक रूप से प्रभावित करती है।

सन्दर्भ सूची

1. *अग्रवाल, मोहिनी (2004) : मौलिक कर्त्तव्य व शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम दशा और दिशा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, वर्ष 23 (2), अक्टूबर, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली।*
2. *अरोड़ कमला, डिफरेन्ट विटवीन द इफेक्टिव इनइफेक्टिव टीचर्स। चॉद एण्ड कम्पनी लिमिटेड, राम नगर, नई दिल्ली। पृ0 सं0 – 05*
3. *आनन्द, एस0पी0 (1983), टीचर्स इफेक्टिवनेस इन स्कूल जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन, वॉल्यूम–8, नं0–6 मार्च 1983 पृ0सं0– 3–12*
4. *एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली (1971), ए स्टडी ऑफ रिएक्शन ऑफ टीचर्स टुर्वस टीचिंग प्रोफेशन इन सेकेण्ड्री सर्वे ऑफ रिसर्च एजूकेशन (1972–78), सोसाइटी फॉर एजूकेशनल रिसर्च एण्ड डेवलपमेण्ट, बडौदा।*
5. *एनुअल रिपोर्ट 1994–95, नवोदय विद्यालय समिति, न्यू दिल्ली।*

6. चित्तौड़, शशि (2005) : निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन, प्राथमिक शिक्षक, वर्ष 30 (2), अप्रैल, जुलाई राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली।
7. दोसी, प्रवीण (2004): प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, प्राइमरी शिक्षक, वर्ष 29 (2), अप्रैल, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् नयी दिल्ली।
8. कुमार, अनिल, ए0के0 (2004) : परसीव्ड स्ट्रेस ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टु जॉब सटिस्फैक्शन एण्ड सरटेन पर्सनलिटी करेक्टरिस्टिक्स इन इण्डियन एजुकेशनल एब्सट्रैक्ट्स, वॉल्यूम 4 (2), जुलाई एन0सी0ई0आर0टी0, न्यू देहली।
9. पी0उषा, शशिकुमार, पी0 (2007) : टीचर कमिटमेण्ट एण्ड टीचर्स सेल्फ कॉन्सेप्ट एज् प्रडिक्टर्स ऑफ जॉब सटिस्फैक्शन इन एजुट्रैक्स, वॉल्यूम 6 (12), अगस्त, नीलकमल पब्लिकेशन प्राईवेट लिमिटेड, हैदराबाद।
10. मैकफरलैण्ड, एम0क्लेर (1988) : ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट्स ऑफ द इफेक्टिव क्लारूम कम्यूनिकेशन प्रोग्राम ऑन सेकेण्डरी स्कूल टीचर्स इन फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च (1988–92), वॉल्यूम–2, एन0सी0ई0आर0टी0 न्यू देहली।
11. शर्मा, चेतना (2002): विभिन्न प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में कार्य दबाव का अध्ययन, रिसर्च एण्ड स्ट्डीज (46–53), एजूकेशन डिपार्टमेण्ट, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, इलाहाबाद।
12. सिन्हा, एस0पी0 (1991): शिक्षक प्रशिक्षण विधियों में परिवर्तन की आवश्यकता, भारतीय आधुनिक शिक्षा वर्ष–सप्तम् (3), एन0सी0ई0आर0टी0, नई दिल्ली।
13. श्रीवास्तव, जी0एन0 प्रकाश एण्ड अग्रवाल, आई0पी0 (1999): रिस्ट्रक्चरिंग सेकेण्डरी टीचर ट्रेनिंगः प्रॉसपेक्टिव मॉडल इन जर्नल ऑफ इण्डियन एजूकेशन, वॉल्यूम (1),एन0सी0 ई0 आर0 टी0, न्यू देहली।